युग-प्रभा

तृतीय रश्मि

युग-भारती

पं॰ दीन दयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय, कानपुर
के पूर्व छात्रों की संस्था

हमारे आराध्य

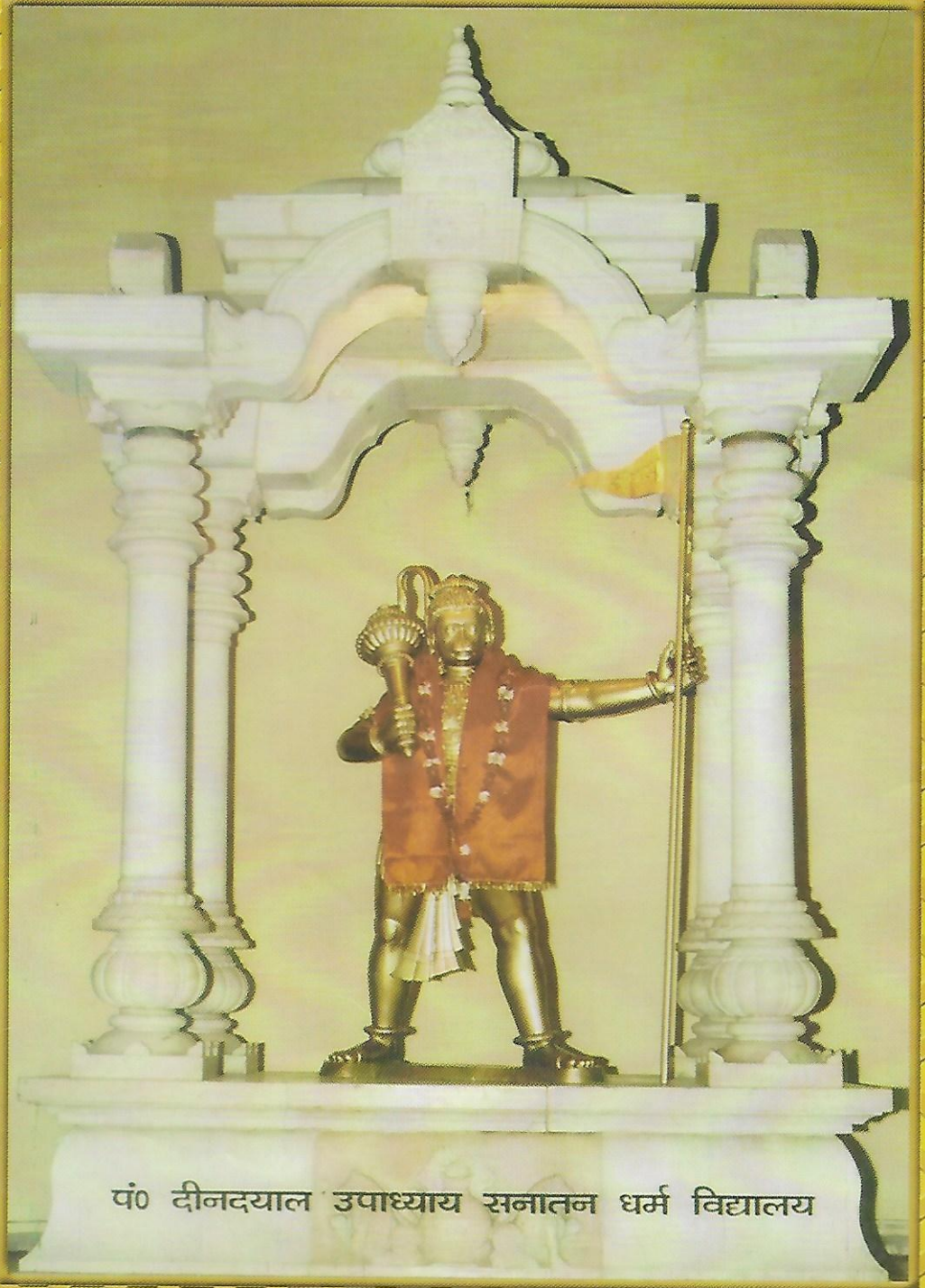

पं० दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय

युग-प्रभा

(युग–भारती की पत्रिका)

तृतीय अङ्क

23 सितम्बर, 2012

संरक्षक :

श्री ओम शङ्कर जी त्रिपाठी

संपादक :

वीरेन्द्र त्रिपाठी

संपादन सहयोग :

प्रवीण कुमार अग्रवाल, राजेश खरे

हमारा लक्ष्य...

राष्ट्र निष्ठा से परिपूर्ण
समाजोन्मुखी
व्यक्तित्व का उत्कर्ष

युग-भारती की प्रार्थना

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्।
तेन त्येक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम्।।

न त्वहं कामये राज्यं, न स्वर्गं नाऽपुनर्भवम्।
कामये दुःखतप्तानां प्राणिनामार्तिनाशनम्।।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भागभवेत्।।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

ज्ञान

ध्येय सिद्धि के लिए उस पर अपनी श्रद्धा रखनी चाहिए। कोई भी व्यक्ति एक ही समय में सहस्त्रों उद्दश्यों की प्राप्ति नहीं कर सकता। अपने सामने एक ही लक्ष्य रखकर उसकी प्राप्ति के लिए अपना सब कुछ न्यौछावर करना पड़ता है। श्रद्धा और विश्वास से अपने सामने रखा हुआ एकमात्र लक्ष्य प्राप्त करने के लिए निरंतर प्रयत्नशील रहना सफलता की कुंजी है। एक बार विचारपूर्वक अपना लक्ष्य और उसकी पूर्ति के साधन निश्चित हो जाने पर उस पर अटल श्रद्धा रखनी चाहिए। अपने लक्ष्य पर श्रद्धा और हृदय में लक्ष्य के प्रति अव्यभिचारी निष्ठा के बिना हम अपने लक्ष्य की प्राप्ति कदापि नहीं कर सकेंगे।

— श्री गुरुजी : समग्र दर्शन

''भूख लगना प्रकृति है, छीनकर खाना विकृति है और बाँटकर खाना संस्कृति है। प्रकृति से संस्कृति तक की मानव-यात्रा पशु से मनुष्य और मनुष्य से शिव बनने की यात्रा है। इस शिवत्व का व्यावहारिक रूप सेवा है।''

— पं० दीन दयाल उपाध्याय

अपनी बात

पूज्य स्व. भाऊराव देवरस के विचार, वात्सल्यमूर्ति सुशीला नरेन्द्रजीत सिंह 'बूजी' के संकल्प और स्व. नरेन्द्रजीत सिंह के मार्गदर्शन में आरंभ हुए पं. दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय से राष्ट्रभक्ति का भाव लेकर निकले हम सभी पूर्व छात्र आज समाज के विभिन्न क्षेत्रों में अपना-अपना कार्य करते हुए भी देश और समाज के उत्थान हेतु सतत् प्रयत्नशील हैं। आज हमारा देश एक ऐसे समय से गुजर रहा है, जब आकण्ठ भ्रष्टाचार से उबरने की व्याकुलता पूरे समाज में दिखाई दे रही है। कहीं अन्ना हजारे, कहीं रामदेव बाबा अगर थोड़ी-सी हुँकार भरते हैं तो लाखों की भीड़ उनका साथ देने को तैयार बैठी है, परन्तु सरकार तो सरकार है, वह चाहे राजशाही हो या प्रजातांत्रिक — उसे तो प्रजा की सुनने की आदत कभी नहीं रही, फिर आज तो जिस लोकपाल मुद्दे पर सर्वाधिक संघर्ष है उसमें सबसे ज्यादा जवाबदेही तो सरकार की ही बनती है। ऐसे में उनका विरोध तो स्वाभाविक है। 'फूट डालो और राज करो' की अंग्रेजी-नीति आज भी उपयोग में है, कभी अन्ना टीम में मतभेद पैदा करने की कोशिश तो कभी बाबा रामदेव और अन्ना के बीच मतान्तर का प्रचार जोर-शोर से किया जा रहा है। ऐसे में हम सभी जो देश और समाज के प्रति अपने दायित्व को महसूस करते हैं, हमें भी विचार करना होगा कि ऐसी परिस्थितियों में हम क्या करें ?

किसी भी देश का इतिहास देखें तो हम पायेंगे कि परिवर्तन जब भी आया है ऐसी ही परिस्थितियों में आया है, जब पूरा समाज वर्तमान से उकता चुका हो। ये परिवर्तन कभी तानाशाही बनकर आया तो कभी राजशाही का अन्त करने में सफल हुआ। हम इस क्रान्तिक मोड़ पर अपने दायित्व से न हटें ऐसा हमारा संकल्प बना रहना चाहिए। भ्रष्टाचार के समूल नाश के लिए हम सभी को आगे बढ़ना होगा। आगे बढ़ने से मेरा तात्पर्य जन्तर-मन्तर पर अनशन करने या रामलीला मैदान पर धरना देने से नहीं है, वरन् भ्रष्टाचार को रोकने का पहला प्रयास स्वयं से आरंभ करने का है। स्वयं से आरंभ कर शनैः-शनैः हम पूरे समाज को परिवर्तित करने में सफल हो सकते हैं। जब कोई रिश्वत देगा नहीं तो लेने वाला भी बिना रिश्वत के काम करने का आदी हो जायेगा और हम जहाँ, जिस कार्य को कर रहे हैं, उसे पूरी प्रामाणिकता से करते हुए दूसरों के लिए आदर्श बन सकते हैं।

'युग-प्रभा' के तीसरे अंक को आप तक पहुँचाने के साथ ही मैं यह भी बताना चाहता हूँ कि अब **'युग-प्रभा'** नियमित रूप से प्रकाशित होगी, अतः आप अपनी रचनायें, विशेष रूप से कुछ ऐसे प्रयास जो आपको लगता है कि हम सभी सदस्यों को कुछ नया करने की प्रेरणा दे सकते हैं, हमें अवश्य भेजते रहें। 'युग-प्रभा' के आगामी अंकों में हम नियमित रूप से ऐसे सदस्यों का विवरण देंगे जो सामाजिक-परिवर्तन की दिशा में ठोस प्रयास कर रहे हैं।

आपके सुझाव और सहयोग की अपेक्षा के साथ ...

आपका

वीरेन्द्र त्रिपाठी

युग–भारती प्रबन्धकारिणी समिति

सत्र 2012–14

संस्थापक व संरक्षक :
श्री ओम शङ्कर त्रिपाठी

सह संरक्षक :
श्री गोपाल कृष्ण शुक्ल

सदस्य संरक्षक-मण्डल

डॉ. राजेश गर्ग
डॉ. नीरज कुमार
डॉ. मलय चतुर्वेदी

अध्यक्ष :
नवीन भार्गव

उपाध्यक्ष :
अभय गुप्ता

महामंत्री :
मोहन कृष्ण मिश्र

कोषाध्यक्ष :
प्रवीण अग्रवाल

मंत्री :
वीरेन्द्र त्रिपाठी

संगठन सचिव :
मनीष कृष्णा

योजना सचिव :
यतीन्द्र सिंह

बौद्धिक सचिव :
प्रवीण पाण्डेय

व्यवस्था सचिव :
राजेश खरे

सदस्य:

विनय अजमानी
ओम प्रकाश मोटवानी
डॉ. प्रवीण सारस्वत
अजय शंकर दीक्षित
पुनीत श्रीवास्तव
अलोक सांवल
प्रदीप बाजपेई

आचार्य जी की कलम से ..

मेरे आत्मस्वरूप युग-भारती परिवारीजन,

मंगलमस्तु।

आप सभी जानते हैं कि मैं स्वलेखन की ओर प्रायः ही प्रेरित करता रहता हूँ। स्वस्थ शरीर, विमल मन और निभ्रन्ति मेधा के प्रति जागरूक करते हुए लिखने के लिए क्यों कहा करता हूँ! कभी विचार किया? लिखने से क्या होगा? आप चर्चित होंगे? प्रसिद्धि पायेंगे? समय कट जायेगा? या फिर अध्यापक प्रवृत्ति को कुछ न कुछ सुझाव देते रहने की बान पड़ जाती है। अथवा इस ओर ध्यान ही नहीं गया।

आज एक लम्बे अन्तराल के बाद 'युग-प्रभा' के पुनर्प्रकाशन के अवसर पर इसी विषय पर मैं अपने विचार प्रस्तुत करना चाहता हूँ। अस्तु !

'अभिव्यक्ति' मानव-जीवन की प्रकृति है और 'आत्मप्रकाशन' उसकी मूल प्रवृत्ति। प्रेम-वैर, उत्साह-निराशा, प्रेरणा-कुण्ठा, आदि अनेक मनोभाव समय और परिस्थिति के अनुसार जीवन के साथ जुड़ते-टूटते रहते हैं। ये भाव ही 'अपने' और 'अपनों' के बीच सेतु अथवा सरिता बनकर सम्बन्धों को जोड़ते-तोड़ते रहते हैं। यह जुड़ने-टूटने की क्रिया इतने स्वाभाविक रूप से गति पकड़े रहती है कि हम 'अपने' को विस्मृत कर 'अपनों' के लिए ही जीने लगते हैं। इन अपनों के प्रति अपने का समर्पण एक ही दिशा में चलता है। अर्थात् हमारे अपनों के अपने हम नहीं दूसरे होते हैं। उदाहरण ही देना हो तो जैसे हम अपने पुत्र के लिए समर्पित हैं वैसे ही हमारा पुत्र अपने पुत्र के प्रति समर्पित होता है। सृष्टि का यह सहज क्रम जब आत्मचिन्तन और आत्माभिव्यक्ति से दूर हो जाता है और अपना समर्प्य समर्पित के प्रति उपेक्षा भाव प्रदर्शित करने लगता है तब अपने को पहले क्लेश, फिर कुण्ठा, धीरे-धीरे निराशा, फिर हताशा घेर लेती है। इस प्रकार कभी-कभी हम इस कदर टूट जाते हैं कि अपने अमूल्य जीवन को ही खो बैठते हैं। यह अपने अर्थात् 'स्व' की विस्मृति के कारण ही होता है। आगे मैं 'अपने' के स्थान पर 'स्व' का ही प्रयोग करूँगा।

अद्‌भुत बात है 'स्व' सर्वत्र विद्यमान रहकर भी विस्मृत कैसे हो जाता है? स्वभाव, स्वरूप, स्वर, स्वत्व, स्वतंत्र, स्वराज्य। अर्थात् भाव से लेकर राज्य तक सर्वत्र स्व की उपस्थिति है, फिर भी स्व विस्मृत है और स्व का विस्तार हर स्मृति पर चढ़ा है। ऐसा इसलिए है कि हमारी अपनी विचार-यात्रा में भटकाव आ गया आ जाता है। हमारा भटकाव दूर हो। मार्ग प्रशस्त हो। लक्ष्य दिखने लगे। तभी यात्रा का उत्साह बनता है। सोत्साह जीवन-यात्रा के लिए क्या, कैसे किया जाए, यह जानना-समझना बहुत आवश्यक है।

विचार कहता है, सम्पूर्ण संसार 'स्व' का ही विस्तार है। जिसको इस 'स्व' की जितनी गहन अनुभूति हो जाती है, उसकी जीवन-यात्रा उतनी ही आनन्दमय रहती है। इस आनन्दमय जीवन-यात्रा के प्रमुख तीन प्रस्थान-बिन्दु हैं। आदि प्रस्थान-बिन्दु है 'भाव', दूसरा है 'विचार' और अन्तिम है 'क्रिया'। 'भाव' अर्थात् मन की इच्छाओं का उद्रेक 'विचार' उन इच्छाओं का वैचारिक विश्लेषण और 'क्रिया' अर्थात् भावों के वैचारिक स्वरूप की व्यावहारिक परिणति। इस 'क्रिया' के रूपों को हम दुनिया की अनेक कलाओं, वैज्ञानिक अनुसंधानों तथा बहुविध साहित्य-ग्रन्थों में देख

सकते हैं। यह क्रिया बीज रूप में सर्वप्रथम हमारी मनोभूमि में ही अंकुरित होती है जो शनैः-शनैः अपने संस्कारों और व्यवहारों के साथ पल्लवित होकर अपना प्रभाव-विस्तार करती है। भाव से क्रिया तक की इस यात्रा को 'चैतन्य' की लोक-यात्रा कहना अधिक समीचीन होगा। चैतन्य की यह लोक-यात्रा कभी उत्साह, कभी निराशा, कभी सुख, कभी दुःख की अनुभूति कराते हुए निरन्तर गतिमान रहती है। इसी चैतन्य-यात्रा के हम सब यात्री हैं। इस निरन्तर किंवा लम्बी यात्रा में आनन्द तब अनुभव होता है, जब साथ में अपने मनोनुकूल सहयात्री हों। अन्यथा पर्याप्त पाथेय बाँधकर एकाकी यात्रा किसी संत्रास से कम नहीं। अकेले ही अपना सरो सामान लादे, अस्पष्ट गन्तव्य के प्रति चिन्तित इस यात्री की स्थिति कुछ वैसी ही होती है जैसे एक भारवाही गधा बोझिल पाँव रखता आगे और आगे मजबूरी के कदमें बढ़ाता चला जा रहा होता है।

यह पाथेय लादकर अकेले यात्रा करना आज की अर्थलोलुपा जीवन-शैली है। व्यक्तिवादिता तो जिसकी प्रकृति और मनहूसियत जिसकी नियति हो गयी है। इस अस्पष्ट लक्ष्य की मनहूस व्यक्तिवादिता से बचे रहकर हम अपने मन के साथी कैसे ढूँढ़ें यह गंभीर और मूल विषय है।

ध्यान रखना होगा कि मन के साथी मन से ही प्रकट होते हैं। यह मन से प्रकट हुए साथी दीर्घकाल तक साथ निभाते हुए भावी पीढ़ी का भी मार्गदर्शन करते रहते हैं। इनका नाम है विचार। ये मानस प्रकृति के साथ उद्‌भूत होकर प्रवृत्तियों का सहयोग पाकर पल्लवित होते रहते हैं। वास्तव में यह विचार-यात्रा ही जीवन का 'लक्ष्य' और 'अमरत्व' की परिभाषा है। विश्व-विधान के अनगिनत रहस्यों का उद्‌घाटन यही मानव-विचार करते हैं। इन्हीं के आधार पर सभ्यताएँ विकसित होती हैं, संस्कृतियाँ पुष्पित होती हैं और लोक-व्यवहारों के विविध रंग सजते हैं।

विचारों की इसी अमूल्य पूँजी को अनन्त काल तक सुरक्षित रखने के लिए लेखन-कला का उद्‌भव और विकास हुआ। लेखन का आधार बना 'अक्षर' (जो कभी क्षरित नहीं होता) इसको गरिमामय बनाया 'शब्द' ने (जो ब्रह्म का ही रूप है) और इसे बोधगम्य बनाया अनुशासित वाक्य-रचना ने। यह शब्दांभरित वाक्य-रचना आनन्द-उल्लास, प्रेरणा-प्रोत्साहन, अनुराग-अपनत्व के साथ ही परिस्थिति के अनुसार वैराग्य-वितृष्णा, क्लेश-कुण्ठा आदि मनोभावों को प्रत्यक्ष कर व्यक्ति की जीवन-यात्रा को सहज बनाती है। इसी को आधार बनाकर, साहित्य, इतिहास, धर्म, विज्ञान, भूगोल, गणित, ज्योतिष, संगीत आदि अनेकविध विषय-क्षेत्र विकसित हुए हैं। इसी वाक्य रचना ने लेखन का नाम पाया है। यही लेखन स्वान्तः सुखाय के साथ-साथ परान्तः सुखाय भी बनता है।

इस भूमिका को पढ़कर आप यह भी कह सकते हैं कि 'हमारा क्षेत्र भिन्न है, हमको लेखक तो बनना नहीं है, फिर हम यह लिखने का रोग क्यों पालें।' इसका उत्तर यह है कि चाहे आप पहलवान और योगी न भी बनें, तो भी आपको अपना शरीर स्वस्थ रखने के लिए कुछ आवश्यक व्यायाम और कुछ प्राणायाम तो करना ही पड़ेगा। अन्यथा दवाइयों के सहारे कैसे जीवन कटेगा ? जैसे शरीर के लिए नियमित व्यायाम-प्राणायाम चाहिए, वैसे ही मन के लिए यह लेखन-योग आवश्यक है। डायरी-लेखन सभी के लिए एक ऐसा उपयुक्त लेखन-योग है, जिसमें अभिव्यक्ति और अभ्यास दोनों का समावेश है और अब तो 'डायरी' साहित्य की एक विधा भी माने जाने लगी है। अपना लिखा हुआ छपे और प्रकाशित हो यह तो अति उत्तम है; किन्तु यदि ऐसा न भी हो सके, तो नियमित लिखकर उसको सुरक्षित रखना चाहिए और

समय-समय पर उसको पढ़ना भी चाहिए। आप देखेंगे इसके नियमित अभ्यास से आपको अपने भीतर एक दिव्य आनन्द की अनुभूति होने लगेगी। शनैः-शनैः आप अपने को क्षमता-सम्पन्न अनुभव करने लगेंगे। मेरे आत्मस्वरूप! यह लेखन-योग अद्‌भुत है। कालान्तर में यही अक्षर-मूर्तियाँ सजीव होकर अपने अन्तस में ब्रह्मानन्द की अनुभूति कराने लगती हैं। इसी का साक्षात्कार कर ऋषि ने काव्य को 'ब्रह्मानन्द सहोदर' कहा है।

आगे कभी इसका और अधिक विस्तृत और स्पष्ट विस्तार प्रस्तुत करने का प्रयास करूँगा। अभी तो केवल तुम सबसे यही कहना है कि 'ओ, मेरी भाव-मूर्तियों! समय निकालकर अधिक से अधिक पढ़ो और जैसा भी बन पड़े लिखो अवश्य।' पर इसका ध्यान रखना तमोगुणी और भ्रष्ट लेखन से हानि भी होती है। माँ शारदा सत् का स्वरूप है न। अतः उदन्तः शुद्धि का विशेष ध्यान रखना है।

इतिशम्

तुम्हारा अपना

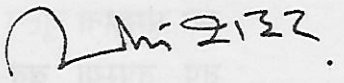

स्मृति-शेष

पं. दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय के प्रारम्भ के समय जिन आचार्यों ने हम सबको अपने स्नेहपूर्ण मार्गदर्शन और अध्यापन से दिशा दी, स्व. प्रयाग सिंह जी उनमें से एक थे।

स्व. प्रयाग जी ने एक लम्बे अरसे तक विद्यालय में अध्यापन करने के पश्चात गोरखपुर स्थित सरस्वती विद्या मन्दिर में प्रधानाचार्य के पद पर कई वर्षों तक सफलतापूर्वक कार्य किया। वहाँ से अवकाश प्राप्त कर विद्या-भारती के प्रान्तीय निरीक्षक के पद पर आसीन रहे। 'तरुण भारती' (युग-भारती का पूर्व नाम) द्वारा आयोजित 'तरुण चेतना शिविर' (चित्रकूट) में 'शिविराधिकारी' के रूप में कार्य करते हुए हम सबको उनके अन्दर एक कुशल प्रशासक एवं सफल वक्ता के स्वरूप का दर्शन भी हुआ था। सहज मुस्कान लिए स्व. प्रयाग सिंह उपाख्य भाई जी का चित्र हमेशा हम सबकी स्मृति में रहेगा।

आचार्य, कवि एवं ज्योतिष विद्या के प्रकाण्ड विद्वान पंडित सुमन दुबे जी भी अब हमारे साथ नहीं हैं। 'सुमन' उपनाम ने उनके मूल नाम महेन्द्र प्रताप दुबे को अपने अन्दर समाहित कर लिया था।

स्व. सुमन जी ने आचार्य श्री ओम शङ्कर जी के आग्रह पर विद्यालय में अध्यापन कार्य करते हुए विद्यालय के छात्रों को कविता-लेखन की बारीकियों से अवगत तो कराया ही, विद्यालय वार्षिकोत्सव पर आयोजित होने वाला कवि-सम्मेलन भी उन्हीं की देन है। इस वर्ष के कवि-सम्मेलन में उनकी कमी हम सबको महसूस होगी।

हम सभी युग-भारती सदस्य अपने इन दोनों आचार्यों को भावपूर्ण श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं।

मत समझना

हम सभी शब्दों की हद में,
बढ़ रहे पुरजोर लेकिन,
मत समझना हाथ में,
तलवार लेने से डरेंगे।

श्वेत पन्ने रंग रंगा कर,
एकता के स्वर चढ़ाकर,
हम करों से कर मिलाकर,
चार पंक्ति गुनगुनाकर,
मत समझना जुल्म सहकर,
तप तपस्या व्रत करेंगे।

अग्नि को भी रौंद तल में,
हम बढ़ेंगे हम चढ़ेंगे,
रक्त की हर बूँद अपनी,
माँ के चरणों में चढ़ाकर,
इस धरा के मान हित,
हँस मौत का सजदा करेंगे।

हम अभी शब्दों की हद में,
बढ़ रहे पुरजोर लेकिन,
मत समझना हाथ में,
तलवार लेने से डरेंगे।

राष्ट्र की जिजीविषा

भ्रमित देश शूद्र वेश,
दुर्दशा भी क्या है शेष,
किन गुणों की साधना में,
व्यस्त शौर्य का प्रदेश,
शक्ति भूल भिक्षु बन,
दैन्यता हुई सघन,
स्वयं स्वधा की भावना में,
मर रहा है राष्ट्रपन,
गिर रहा है देश फिर,
गर्त में शनैः शनैः,
मर गयी है आज क्या,
इस राष्ट्र की जिजीविषा?

—नीरज द्विवेदी
(बैच 2005)

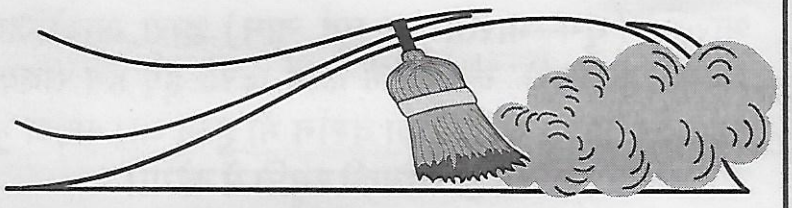

''गाँवों में जहाँ समय अचल खड़ा है, जहाँ माता और पिता अपनी संतानों के भविष्य को सँवारने में असमर्थ हैं, वहाँ जब तक आशा और पुरुषार्थ का संदेश नहीं पहुँचा पायेंगे, तब तक हम राष्ट्र के चैतन्य को जागृत नहीं कर सकते। हमारी श्रद्धा का केन्द्र, आराध्य व उपास्य, हमारे पराक्रम और प्रयत्न के उपकरण और उपलब्धियों का मापदण्ड वह मानव होगा जो आज भी शब्दशः अनिकेत और अपरिग्रही है।''

- पं० दीनदयाल उपाध्याय

रजत जयन्ती समारोह की स्मृतियाँ

सन् 1995 में पं. दीनदयाल सनातन धर्म विद्यालय के रजत जयंती वर्ष कार्यक्रम के समय के युग भारती की टीम के साथ काम करते हुए तमाम अनुभव किए, जिसमें से कुछ रोचक अनुभव मैं लिखने की कोशिश कर रहा हूँ।

रजत जयन्ती समारोह को सफलतापूर्वक सम्पन्न करने के लिए कई महीनों पहले से पूरी रूपरेखा बनाकर प्रधानाचार्य श्री ओम शङ्कर त्रिपाठी जी के नेतृत्व में कई पूर्व छात्र लग गये थे, जिसमें प्रमुख रूप से नीरज कुमार, वीरेन्द्र त्रिपाठी, राजेश गर्ग, डॉ. सुनील गुप्ता, पं. गोपाल कृष्ण शुक्ल व मैं स्वयं (अजय शंकर दीक्षित), प्रदीप बाजपेयी, दिनेश भदौरिया, शुभेन्द्र सिंह परिहार आदि थे। इस कार्यक्रम में दो प्रमुख योजनाएँ थीं — पहली दीनदयाल जी की प्रतिमा लगवाना व दूसरी क्रीड़ा संकुल का निर्माण। दोनों ही कार्यों के लिए धन व कुशल लोगों की आवश्यकता थी। इसके लिए आचार्य जी के आह्वान पर फर्रुखाबाद, कासगंज, दिल्ली, कानपुर आदि जगहों से सहयोग मिला। इसके लिए हम लोगों को विभिन्न जनपदों का दौरा भी करना पड़ा।

संस्मरण :

(1) कार्यक्रम के एक दिन पहले नवनिर्मित क्रीड़ा संकुल का अवलोकन किया गया तो दिखा कि कार्यक्रम स्थल के एक तरफ, बहुत बड़ा अद्धे व गुम्मे (मलवे) का ढेर है। कम से कम दो ट्रक तो होगा ही। हम सब परेशान हो गये कि यह कैसे हटेगा। कल तो कार्यक्रम शुरू होना है। आचार्य ओम शङ्कर जी को सूचना दी। आचार्य जी हम सबके साथ वहाँ पहुँचे, शाम हो चुकी थी। छात्रावास के छात्र मैदान में खेल रहे थे। आचार्य जी ने सभी छात्रों को बुलाया और हमारे साथ एक पंक्ति में खड़ा करके समझाया कि एक-एक ईंटा उठाओ और बगल वाले साथी को पकड़ाते जाओ। पंक्ति इतनी बड़ी थी कि उसका दूसरा सिरा क्रीड़ा संकुल के बाहर था। हम सभी हनुमान जी का नाम लेकर शुरू हो गये। करीब 50 मिनट में वह मलवा गायब हो गया। इस काम में षष्ठ कक्षा के छात्रों से लेकर द्वादश कक्षा तक के वर्तमान छात्र भी हमारे साथ थे।

(2) कार्यक्रम के एक दिन पहले दीनदयाल जी की प्रतिमा तो लग गयी थी। लेकिन उसके साथ का हिस्सा तैयार नहीं था। पत्थर व टाइल्स लगने थे। अपने पूर्व छात्र भइया नितिन मित्तल (आर्किटेक्ट) के सहयोग से कुशल कारीगरों की टीम ने पूरे दिन व रात लगकर कार्यक्रम वाले दिन तक उसे पूरा किया।

हम सभी देर रात को सोये। सुबह का अंधेरा था, मेरी नींद खुली तो झाड़ू लगने की आवाज आयी। मैंने उठकर देखा तो चकित रह गया। युग-भारती के अध्यक्ष नीरज कुमार नवनिर्मित दीनदयाल जी की मूर्ति-स्थल पर झाड़ू लगा रहे थे। मैंने पूछा यह क्या ? वे बोले, कारीगर अभी गये हैं। मूर्ति के आसपास इतनी गंदगी थी कि सुबह लोग देखते तो बुरा लगता।

(3) पूर्व प्रधान मंत्री श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी को कार्यक्रम में लेने के लिए हम 17 लोग स्टेशन पहुँचे। वहाँ भा.ज.पा. के कार्यकर्ताओं की बहुत भीड़ थी। ट्रेन लेट हो गयी। भाजपाई गुलाब की मालाएँ लेकर खड़े थे।

ट्रेन काफी देरी से आयी। लेकिन उससे पहले दो बार इंजन निकल गया। इंजन देख, भाजपाइयों में जोश आ जाता, नारे लगा माला पहनाने की होड़ में आगे आने की कोशिश करते। लेकिन जब ट्रेन आयी तब तक लगभग सभी के मालाओं से गुलाब की पंखुड़ियाँ प्लेटफार्म पर ही गिर चुकी थीं। उनके हाथ में केवल धागा शेष बचा रह गया।

इस भीड़ में पत्रकारों ने हमसे पूछा कि विद्यालय से कितने लोग हैं। हमने बताया 17। तो पूछा कि प्लेटफार्म टिकट कितनों ने लिया है। हमने उन्हें दिखाया कि 20 टिकट मेरे पास हैं। उन्हें बहुत आश्चर्य हुआ कि किसी राजनैतिक हस्ती को लेने आने वाले संस्था के सभी लोग प्लेटफार्म टिकट लेकर आये हैं। वे बोले — ये तो इनके **विद्यालय के संस्कार हैं जो इन्हें भीड़ से अलग किए हैं।**

इसके बाद हम सभी बाहर आये और गाड़ियों में बैठकर वापस विद्यालय चल दिये। बहुत अफरातफरी थी भाजपाइयों के कारण। हम सभी आपस में अलग-अलग हो गये। जिसको जिसकी गाड़ी में जगह मिली चल दिये। हमारी गाड़ी हटने के बाद चली। माल रोड पर देखा 'युग-भारती' अध्यक्ष नीरज कुमार रिक्शे से चले जा रहे हैं। हम लोगों ने गाड़ी रोककर उन्हें बैठाया।

मा. अटल जी नवनिर्मित माधव क्रीड़ा-संकुल का उद्घाटन करके उसके पीछे के कक्ष में जलपान के लिए पहुँचे। उन्होंने लघुशंका के लिए शौचालय पूछा। उस परिसर पर वह तैयार नहीं था। प्रधानाचार्य जी ने अपने आवास की चाभी हमें देकर अटल जी को वहाँ निवृत्ति के लिए ले जाने को कहा। मैं व अटल जी कमाण्डों घेरे में चल पड़े। आचार्य जी के आवास को खोलकर उन्हें अन्दर ले गये। उस समय आवास में केवल मैं व अटल जी ही थे। मुझे बहुत गर्व का अनुभव हो रहा था।

जब अटल जी के साथ आवास से बाहर निकले तो बाहर उन्हें देखने के लिए बहुत भीड़ लगी थी। अटल जी ने भीड़ की तरफ देख और जोर से बोले—गुलाब दत्त जी वहाँ कहाँ खड़े हो? हमारे पास आओ। (भीड़ के पीछे अटल जी के सहपाठी डॉ. गुलाब दत्त त्रिपाठी जी खड़े थे) डॉ. गुलाब दत्त जी (अपने पूर्व छात्र कर्नल हरीन्द्र त्रिपाठी व वीरेन्द्र त्रिपाठी जी के पिताश्री) भावुक हो गये। फिर कमाण्डों उन्हें अटल जी के पास लाये और दोनों (डॉ. त्रिपाठी और अटल जी) साथ-साथ क्रीड़ा-संकुल पहुँचे। फिर अटल जी ने अपने साथी को कार्यक्रम समाप्ति तक जाने न दिया।

रजत जयंती की ऐसी अनेक स्मृतियाँ हैं जो हम कभी भूल न सकेंगे। ईश्वर ऐसा आयोजन फिर करने का मौका दे।

अजय शङ्कर दीक्षित

(बैच 1983)

जवानी

जवानी शौर्य का शृंगार संयम की सरल भाषा।
उमड़ती भावना का ज्वार तप की मौन परिभाषा।।

जवानी के लिए इतिहास के पन्ने मचलते हैं
जवानी की धमक से काल के आलेख टलते हैं
जवानी की उमंगों से नये प्रतिमान बन जाते
प्रबन्धों के नये अध्याय नूतन गान बन जाते
जवानी ने कभी अवरोध की सत्ता न मानी है
प्रथाओं वर्जनाओं की इयत्ता भी न जानी है
जवानी ने सदा संकल्प को साथी बनाया है
मधुर पय ही नहीं केवल गरल भी आजमाया है।।1।।

जवानी को कभी सत्ता-व्यवस्था रोक पायी क्या?
उसे सम्मान सुख की जिन्दगानी 'लोक' पायी क्या?
जवानी ने कभी क्या वासना के चरण धोये हैं?
दु:खों दुविधा प्रपंचों में कभी अरमान सोये हैं?
जवानी कर्म की मीना सफीना है उमंगों की
चुनौती हिम-शिखर की ओर सागर की तरंगों की
जवानी दुर्बलों का त्राण जुल्मों पर दुधारा है।
जवानी को सदा ही देश-हित बलिदान प्यारा है।।2।।

जवानी उम्र के दर की नहीं मोहताज होती है
समय के भाल पर जगमग चमकता ताज होती है
जवानी भावना का ज्वार है संसार सागर का
जवानी कर्म का संभार है यह मंत्र साबर का
जवानी को जरा का लोभ जब-जब घेर लेता है
धरा का भाग्य अपने आप ही मुँह फेर लेता है
जवानी ज्योति जीवन की अंधेरे को भगाती है
प्रणव का घोष मंगल आरती की दिव्य बाती है।।3।।

जवानी आत्मवश अलमस्त इन्द्रिय की नहीं चेरी
गरजती भीम भैरव से बजी जब-जब समय भेरी
जवानी वह नहीं जिसको मनोभव जीत लेता है
जवानी का वही हकदार जो मन का विजेता है
न वह जीवन जवानी का जहाँ लिप्सा पनपती है
प्रखर तेजस्विता की कान्ति जीवन भर दमकती है
जवानी से लड़ा जब भी जमाना मात खाया है
जगत भर ही नहीं विधि भी सदा प्रतिघात पाया है।।4।।

जवानी लक्ष्य के संधान की अनुपम कहानी है
शिखर से सिन्धु के तल की अमर पावन निशानी है
जवानी ने जगाया व्योम को पाताल को साधा
रही कोई न अग-जग में हटाई जो नहीं बाधा
जवानी आचरण का कोष है व्यवहार की भाषा
घुमड़ती भावना का घोष वह संसार की आशा
जवानी ने कभी ललकार पर रुकना नहीं जाना
स्वयं यम ही न क्यों छेड़े कभी झुकना नहीं जाना।।5।।

जवानी मातृ-मन्दिर नींव में जिन्दा दफन होती
मगर वह जाफरों के जिस्म पर बनकर कफन सोती
जवानी काल के दर बेधड़क दस्तक बजाती है
स्वयं के सुख भरे संसार की अरथी सजाती है
जवानी मरण का त्योहार जीवन का भरोसा है
जुझारू शीश पर चमचम सजा भगवा सरोपा है
जवानी ने सजल बन सूखते बंजर सजाये हैं
शिखर को रौंद अरि के द्वार पर धौंसे बजाये हैं।।6।।

जवानी मातृ-मन्दिर के लिए कुर्बान होती है
जवानी दर्द दिल का शीश का सम्मान होती है
जवानी शक्ति मन्दिर का सजीला शौर्य का विग्रह
जवानी ध्यान ध्रुव का और अर्जुन का मनोनिग्रह
जवानी के लिए संसार का स्रष्टा मचलता है
कभी वह राम अथवा श्याम बन लिप्सा कुचलता है
जवानी से सदा मजबूरियाँ डरती-सहमती हैं
जवानी अग्निधर्मा कोख है ज्वाला जनमती है।।7।।

जवानी वह नहीं जो जुल्म के आगे झुके रोए
धधकते क्रान्ति के अंगार सिर पर बोझ से ढोये
सिसक रोए अँधेरे में जगे भयभीत आँखों से
सिहर जाये जमाने से गगन तौले न पाँखों से
जवानी शूल रौंदे राह के अंगार पर दौड़े
लड़े बेखौफ़ जुल्मों से मसल दे राह के रोड़े
जवानी 'सिद्धि की गुटिका' नहीं है, साधना तप है
सुखद शैया न जीवन की मरण के मंत्र का जप है।।8।।

जवानी जुल्म का ज्वालामुखी बढ़कर बुझाती है
फड़कते क्रान्ति के नव छन्द युग-कवि को सुझाती है
जवानी दीप्तिमय सन्देश की अद्भुत किरण सी है
सनातन पावनी गंगा बसन्ती आभरण सी है
जवानी के अनोखे स्वप्न जब संकल्प बन जाते
फड़कते हैं सबल भुजदण्ड उन्नत भाल तन जाते
जवानी को न सुख की नींद जीवन भर सुहाती है
जकड़कर मुट्ठियों में वज्र युग-जड़ता ढहाती है।।9।।

जवानी केसरी बाना लपकती ज्वाल जौहर की
भवानी की भयद् जयकार वह हुंकार हर हर की
जवानी का उमड़ता जोश जय का घोष होता है
चमकती चंचला सी खड्ग वाला रोष होता है
जवानी विन्ध्य के तल में कभी सहयाद्रि पर होती
विजय पथ की शिलायें बेखबर हो सिन्धु पर सोती
जवानी के सभी साधन भुजाओं में बसे रहते
शरासन पर चढ़े या फिर सजग तूणीर में रहते।।10।।

जवानी को जवानी में अगर मैंने लिखा होता
तभी संसार का छल-छद्म भी मुझको दिखा होता
तो यह सिर तोड़ता सा जल न ऊपर से गुजर पाता
भरे बाजार यह आचार किंचित पुज नहीं पाता
जवानी में सजाये जो सुखद सपने अधूरे भी
न कोई गीत पूरे हैं न ही संकल्प पूरे हैं फिर भी
शपथ की साधना का मंत्र हैं विश्वास जीवन का
भरोसा आत्मबल पर और सत्संयास तन-मन का।।11।।

जवानी शील के सम्मान की सीमा समझती है
प्रपंचों की सबल चालें समझ तत्क्षण गरजती है
जवानी ने जवानी दे बुढ़ापे को बचाया है
लुटाकर स्वयं का मधु गरल अन्तर में पचाया है
जवानी की धरोहर को जवानी ही सँजोती है
धरा में क्रान्ति की तकदीर अपने हाथ बोती है
जवानी को जवानी ने न जब-जब जान पाया है
तभी गहरा अँधेरा व्योम में भरपूर छाया है।।12।।

जवानी जब जवानी को समय पर जान लेती है
स्वयं के शत्रु को जब भी सहज पहचान लेती है
धरा का तब न घुट-घुट कर सहज सौभाग्य रोता है
किलकता 'दूध' 'अनुभव' शांति की सुख नींद सोता है
तभी इतिहास गौरव से भरा अध्याय लिखता है
विहँसती है तभी धरती गगन में तोष दिखता है
विधाता! कुछ करो ऐसा जगे जीवन जवानी का
स्वधा के मंत्र के निर्घोष हो पूजन भवानी का।।13।।

अरे, ओ नौजवानों! उठ पड़ो परखो जवानी को
शिवा का शौर्य, गुरु की तेग, बन्दा की रवानी को
महाराणा बनो युग के, करो हुंकार जी भर के
गगन में भर उठे गुंजार जय श्री राम, हर हर के
भगे भ्रष्टाचरण का भूत जग व्यवहार पावन हो
परस्पर का जगे विश्वास हर मंजर सुहावन हो
हमारे देश का गौरव क्षितिज में छा सके फिर से
पताका विश्व विजयी व्योम में लहरा उठे फिर से।।14।।

—ओम शङ्कर त्रिपाठी
संरक्षक
युग-भारती

न दैन्यं न पलायनम्

देख रहा था व्यग्र प्रवाह

पता नहीं था कि कितने दिन चलेगा? पूर्वोत्तर के लगभग दो लाख लोग बंगलोर में हैं, मुख्यतः विद्यार्थी हैं, सेक्योरिटी सेवाओं में हैं, होटलों में हैं, ब्यूटी-पॉर्लर में हैं और पर्याप्त मात्रा में आईटी में भी हैं। पहले दिन के बाद लगा कि यदि यही क्रम चलता रहा तो 20-25 दिन तक लगे रहना पड़ेगा। अगले दिन के समाचार-पत्र और न्यूज चैनल बस इसी समाचार से भरे हुए थे, हर रोज बस यही आग्रह था कि देश सबका है, कोई पलायन न करे, किसी को कोई भय नहीं है, सबको सुरक्षा दी जायेगी।

आशा थी कि इन आग्रहों का प्रभाव शीघ्र ही देखने को मिलेगा, लोग आश्वस्त हो पूर्वोत्तर जाने का विचार त्याग देंगे। व्यक्तिगत आशा और रेलवेगत कर्तव्यों में अन्तर बना हुआ था, तैयारी फिर भी रखनी थी। अगले दो दिन प्रवाह और बढ़ा, लगभग 11000 और 14000 के आस-पास लोग गये। रेलवे स्थितियों से निपटने के लिए तैयार थी, पहले दिन की गुहार काम आयी, पहले दिन का अनुभव काम आया, कुल तीन दिनों में और 48 घण्टों के अन्तराल में 11 ट्रेनें लगभग 33000 यात्रियों को लेकर पूर्वोत्तर गयीं। उसके बाद भी प्रवाह कुछ दिन रहा पर संख्या घटकर प्रतिदिन 500 के आस-पास ही रही। रेलवे का तंत्र कार्यरत था, हमारी उपस्थिति कर्मचारियों का उत्साह बढ़ाये रखने के दृष्टिकोण से अधिक उपयोगी थी। अगले दो दिन प्रवाह के अवलोकन में निकले, यह समझने में निकले कि भय का प्रवाह कितना व्यापक होता है, यह कल्पना करने में निकले कि देश के विभाजन के समय जन-मानस के मन की क्या स्थिति रही होगी?

भीड़ में व्यग्रता थी, चेहरे पर भय मिश्रित दुःख था, एक आशा भी थी कि अपने घर वापस जा रहे हैं। कुछ के पास केवल हैण्डबैग ही थे, जिनसे यह लग रहा था कि वे शीघ्र ही लौटेंगे। कई लोग सपरिवार जा रहे थे, उनके पास सामान अधिक था। हर ट्रेन को विदा करते समय खिड़कियों से झाँकते यात्रियों की आँखों में उन भावों को पढ़ रहा था, जिन्हें लेकर वे बंगलौर से प्रस्थान कर रहे थे। कुछ चेहरों पर धन्यवाद के भाव थे, कुछ के चेहरे अभी तक शून्य में थे, कुछ युवा हाथ हिलाकर आभार प्रकट कर रहे थे।

इसके पहले जब कभी भी पूर्वोत्तर के युवाओं का समूह देखता था, उनके भीतर की जीवन्तता प्रभावित करती थी। प्रसन्नचित्त रहने वाले लोग हैं, पूर्वोत्तर के सीधे, शर्मीले और मिलनसार। कृत्रिमता का कभी लेशमात्र स्पर्श नहीं देखा था उनके व्यवहार में, सदा ही सहज। पहाड़ों की कठिनता में गठा स्वस्थ शरीर और प्रकृति के सोंधेपन से प्राप्त सरल मन। जीवन के प्रति कोई विशेष दार्शनिक आग्रह नहीं, हर दिन को पूर्ण देने और पूर्ण जीने का उत्साह। ट्रेन से जाते हुए लोगों में उस छवि को ढूँढ़ने का प्रयास कर रहा था पर वह मिली नहीं। दूसरे दिन भय कम था, तीसरे दिन चेहरों पर भय नहीं था पर वे भाव भी नहीं थे जिसके लिए पूर्वोत्तर के लोग पहचाने जाते हैं।

यह समझना बहुत ही कठिन था कि उनके मन में क्या चल रहा है। स्टेशन पर मीडियाकर्मियों का जमावड़ा बना रहा इन तीन दिनों, उन्होंने जानने का प्रयास किया पर पलायन कर रहे लोगों ने कुछ बोलने की अपेक्षा शान्त रहना उचित समझा। राज्य के मंत्रीगण अपने वरिष्ठतम पुलिस अधिकारियों के साथ वहाँ उपस्थित थे, प्रयासरत थे कि पलायन रोका जा सके, पर उन तीन दिनों तक पलायन रुका नहीं। कई गैर सरकारी संगठनों के लोग वहाँ उपस्थित थे, उन्हें मनाने के

लिए, पर मन में घाव गहरा था, संवेदनीय सान्त्वनाओं से भरने वाला नहीं था। भय जब व्याप्त होता है तो आशाओं को भी क्षीण कर देता है, गहरे तक, शक्ति को भी संदेह से देखने लगता है, अविश्वास करने लगता है सारी व्यवस्थाओं पर। यही कारण रहा होगा कि सुरक्षा के सारे आश्वासन होने के बाद भी उनका मन यह मानने को तैयार नहीं था कि वे यहाँ सुरक्षित हैं।

क्या पलायन ही विकल्प था? कई बार तो लगा कि ट्रेनों की उपलब्धता ने उन्हें एक सरल विकल्प दे दिया है, पलायन कर जाने का। यदि इतनी अधिक मात्रा में ट्रेनें नहीं रहतीं तो सम्भव था कि लोग अपने स्थानों पर बने रहते और अधीर न होते, कोई और विकल्प ढूँढ़ते। परिस्थितियों से भाग जाना तो उपाय नहीं है, समस्यायें तो हर जगह खड़ी मिलेंगी, कहीं छोटी मिलेगी, कहीं बड़ी मिलेगी। पर भावनाओं के उफान में तार्किक चिन्तन सम्भव नहीं होता, व्यक्ति सरलतम विकल्प की ओर भागता है। हमें भी उस समय तो अपने सामने दसियों हजार लोगों को सकुशल पूर्वोत्तर पहुँचाने का कर्म दिख रहा था। क्या उचित है, क्या नहीं, इस पर विचार करने की न तो शक्ति थी, न समय था और न अधिकार ही था।

उन्हें जब लगेगा कि परिस्थितियाँ ठीक हो गयी हैं, तो लोग वापस लौटना प्रारम्भ करेंगे। जब बिना किसी विशेष घटना के इतना बड़ा पलायन हो गया तो किन प्रयासों से विश्वास वापस लौटेगा, यह समझना कठिन है। यह सम्भव है कि कुछ दिनों के बाद उनके मन का उद्वेग शान्त हो जायेगा, उनको अपने आप पर विश्वास स्थापित हो जायेगा, हवा में व्याप्त अविश्वास छट जायेगा, तब वे वापस लौट आयेंगे।

हम अपनी सांस्कृतिक एकता के लिए पहचाने जाते हैं, विविधतायें हमारी संस्कृति के शरीर में विभिन्न आभूषणों की तरह हैं, हर कोई अपनी तरह से संस्कृति को सुशोभित करने में लगा हुआ है। विविधता को विषमता से जोड़कर उपाधियों और आकारों में अपने आप से भिन्न लोगों के प्रति विद्वेष की भावना संस्कृति को आहत कर रही है, लोकतंत्र के प्रतीकों पर निर्मम प्रहार कर रही है। यह प्रवृत्ति कोई सामान्य अपराध नहीं, इसे किसी भी स्वरूप में देशद्रोह से कम जघन्य नहीं समझा जा सकता है, यह देश के स्वरूप पर एक आत्मघाती प्रहार है। भविष्य में कभी पलायन न हो, यह सुनिश्चित करने के लिए हमारे निर्णय कठोर हों अन्यथा हमें अपना हृदय कठोर करने का अभ्यास डालना चाहिए, क्योंकि पलायन कर रहे लोगों की पीड़ा को देखने की शक्ति तभी विकसित हो पायेगी।

इसके पहले अपना जीवन बचाने हेतु अकाल से प्रभावित क्षेत्रों में **जीविका की खोज में पलायन** होते देखा था, उस समय भी मन द्रवित हुआ था। पर यह पहला अनुभव था जब लोगों को अपना जीवन बचाने के लिए अपनी जीविका छोड़कर भागते देखा है। तीन दिन तक कार्य की थकान को उतना कष्ट नहीं दे पायी जितना कष्ट पलायन करते लोगों के चेहरों के भाव दे गये। प्रलय के पश्चात मनु के मन में सब कुछ खो जाने के भाव थे, वैसे ही कुछ भाव आँखों में तैर रहे थे, दोनों की ही आँखें नम थीं। अन्तर बस इतना था कि मनु पहाड़ पर बैठे थे, मैं स्टेशन पर, मनु जल का प्रलय प्रवाह देख रहे थे, मैं जन का व्यग्र प्रवाह।

यदि यह अलगाववाद का नृशंस नृत्य न रुका तो आगामी इतिहास के अध्याय इसी पंक्ति से प्रारम्भ होंगे – **'एक पुरुष भीगे नयनों से देख रहा था व्यग्र प्रवाह...।'**

प्रवीण पाण्डेय
(बौद्धिक सचिव)
युग-भारती

With best compliments from :

MEENA *Foto Color*

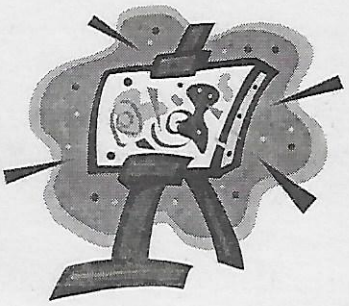

BOOKING CENTRE MIDAS

112/353, SWAROOP NAGAR, KANPUR

Ph. : (0512)2525391
Mob. : 9935025627

Praveen Agarwal
(Batch 1983)

Manoj Gupta
(Batch 1977)

Ph. : (0512)2530741, 3042466

Bagicha FflorIST

7/147, SWAROOP NAGAR, VIDYA MANDIR, KANPUR

Bagicha, The Mall, 16/96, Sen Balika Building, Kanpur
Ph. : (0512)2377741, Mob. : 8009426057
E-mail : bagichaflorist@yahoo.com

With best compliments from :

VIJAY GUPTA (Batch 1977)

Mob. : 9415128601

E-mail : vijaybrothers@gmail.com

VISHAL GUPTA (Batch 2000)

Mob. : 9415128604

E-mail : vish.u.al@gmail.com

Business Concern :

- Vaibhav Edibles Pvt. Ltd., Kanpur (U.P.)
- Shyama Ji Oil Chem Pvt. Ltd., Kanpur (U.P.)
- Janak Retail India Pvt. Ltd., Durgapur (W.B.)
- S.V. Oil & Chemicals Industries, Hyderabad (A.P.)

74/276, HALSEY ROAD, KANPUR-208 001

20.08.99 को दीनदयाल विद्यालय में कारगिल शहीदों की स्मृति में कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसमें कवि आचार्य स्व. 'सुमन' जी ने यह कविता पढ़ी–

कारगिल शहीद–गीत

पीठ पै लदा था बोझ बर्फ के पहाड़ जैसा
आग की कथा कही है तब मिली स्वतंत्रता।
हाथ जोड़ के या भीख मांग के नहीं मिली है
रक्त की नदी बही है तब मिली स्वतंत्रता।
मौत भी झुका के शीश जिन्दगी से बार–बार
हार मानती रही है तब मिली स्वतंत्रता।
पुत्र कितने हुए शहीद पूछ लो धरा से
पीर कितनी सही है तब मिली स्वतंत्रता।।1।।

अच्छा नहीं होता है पड़ोसियों से पंगा लेना
हेकड़ी तुम्हारी रही किसी भी न काम की।
सोते हुए सिंह को जगा के क्या मिला है तुम्हें
अपनी ही जिन्दगी क्यों नाहक हराम की।
हर दरवाजे पे झुका के शीश माँगी भीख
मिली न मदद कहीं कोशिशें तमाम कीं।
हमने सलाम भेजा तुम लामबंद हुए
ऐसी–तैसी हो गयी तुम्हारे इसलाम की।।2।।

शौर्य की कथा ज्वलंत लेखनी लिखेगी कैसे?
स्याही सूख–सूख जाती शब्द मिलते नहीं।
माँ के लाडलों की गाथा कवि क्या बयान करे
कंठ काँपता है और होंठ हिलते नहीं।
धन्य होती मौत भी लगाके इनको गले से
आग के ये फूल रोज–रोज खिलते नहीं।
जाने कौन साँचे में विधाता इन्हें ढालता है
आम साँचे में तो ये शहीद ढलते नहीं।।3।।

मातृभूमि के लिए शहीद हो गए जो वीर
कर्ज माँ के दूध का चुका के धन्य हो गए।
जिस धरती पै खेल के हुए बड़े, उसी पै
बूँद-बूँद रक्त की बहा के धन्य हो गए।
जिंदगी से कीमती था स्वाभिमान देश का सो
जिंदगी को दाँव पै लगा के धन्य हो गये।
माँ के लाडले सपूत वीर बाँकुरे स्वयं को
माँ की पुण्य गोद में सुला के धन्य हो गए।।4।।

एक साध पूरी होते-होते फिर रह गयी
इस बार फिर वारा-न्यारा क्यों हुआ नहीं?
इस बार फिर दिल्ली पशोपेश में रही क्यों
शत्रु को मिटाने का इशारा क्यों हुआ नहीं?
पाकिस्तान दुनिया के मानचित्र में न होता
सारे झंझटों को निपटारा क्यों हुआ नहीं?
कवि का नहीं शहीद सैनिकों का प्रश्न है ये
पूरा कश्मीर ही हमारा क्यों हुआ नहीं?5।।

माथे की शिकन बूढ़े बाप की विकल हुई
माँ की सूनी-सूनी आँखें राह नापती रहीं।
जड़ हो गया प्रिया के अधरों का कौतूहल
जिंदगी की आहट उसाँसें जाँचती रहीं।
शैशव अबोध पूछने लगा पिता का पता
आसमान रो पड़ा दिशाएँ काँपती रहीं।
माँ धरा ने सीने से लगा लिया शहीद को
तो रोते-रोते मौत भी प्रशस्ति बाँचती रही।।6।।

जीवन

मैं भी चलता हूँ
तू भी चलता है
ऐसे ही तो जीवन चलता है।।1।।

कोई कहता है, कोई सुनता है
कोई दो बातें करता है
कोई मिलता है, कोई फिरता है
कोई हर पल में शामिल रहता है
कोई खुशी से हँसता है
कोई गम से रोता है
कोई वक़्त को बेमतलब ही ताना देता रहता है
ऐसे ही तो जीवन चलता है।।2।।

राही कितने आते हैं
राही कितने जाते हैं
कितने ही अफसाने रोज मिट्टी में मिल जाते हैं
कोई शुरू तो करता है
कोई अंत से डरता है
कोई उलझ-उलझ अपने पैरों में आपे आप ही गिरता है
ऐसे ही तो जीवन चलता है।।3।।

किसको मिला उजियारा सारा
किसके हिस्से बस अँधियारा
कौन चाँद को केवल बढ़ते ही देखा करता है
शोहरत मिली तो बदनामी भी
किस्मत मिली तो कुर्बानी भी
रंगमहल में किसका जीवन सालों साल गुजरता है
ऐसे ही तो जीवन चलता है।।4।।

माँगो जिसको मिला नहीं
मिले हुए की बात नहीं
अब तो दिल ये मेरा भी डगमग डगमग करता है
हिलते होठों पर बात नहीं
कंगन कितने पर हाथ नहीं
वक़्त का खंजर धीरे-धीरे हर सीने में उतरता है।
ऐसे ही तो जीवन चलता है।।5।।

सपनों सी बातें लगती हैं
उलझी सी गांठें लगती हैं
महके गुलशन में भी तो पतझड़ आ दस्तक देता है
खुशियों में भी गम मिल जाये
अंबरों में चाँद नज़र आये
गर्मी के जी भर तपने पर मौसम खूब बरसता है
ऐसे ही तो जीवन चलता है।।6।।

सूनी आँखें रोती हैं
सोती ना सोने देती हैं
रंगों की इस बेरंगी महफ़िल में दिल खोया खोया रहता है
सपने टूटा करते हैं
फिर भी आसमान हिलोरें लेते हैं
काली आंधी के बीच मगर ये बिजली बन के चमकता है
ऐसे ही तो जीवन चलता है।।7।।

होठों पर प्यास थिरकती है
सीनों में आग सुलगती है
बुझती आँखों में जाते जाते उम्मीद भरा दिन रहता है
उन आँखों की अब आस गई
प्यासों की सारी प्यास गई
अब कोई मुझसे ये मत पूछो, ये काल चक्र कब चलता है
ऐसे ही तो जीवन चलता है।।8।।

संतोष मिश्र आई.ए.एस.
(बैच 1988)
डायरेक्टर तमिलनाडु टूरिज्म

आग व धुएँ से बचाव

1. किसी भी दुर्घटना में आग से ज्यादा धुएँ से प्रभावित होने वाले तथा जान गंवाने वाले लोगों के बारे में हम अकसर पढ़ते-देखते हैं।
2. सिर्फ तीन परिस्थितियों के एक साथ पैदा होने से आग लग जाती है। जैसे- ज्वलनशील पदार्थ, ऑक्सीजन तथा गर्मी अथवा स्पार्क।
3. जलने वाले पदार्थ तथा हवा में मौजूद गैसों के केमिकल रिएक्शन के कारण कुछ गैसें विभिन्न तापमान पर उत्पन्न होती रहती हैं, जिनमें प्रमुख हैं CO_2, CO, HCN, NO, HBr आदि।
4. ये गैसें धुएँ में होती हैं तथा जानलेवा साबित होती हैं। धुआँ हमेशा नीचे से ऊपर की ओर या High Density से Low Density की ओर भागता है। उसके रास्ते में आने वाले व्यक्ति सांस के द्वारा धुएँ को शरीर के अन्दर जाने से बचा नहीं सकते।
5. शरीर के अन्दर जाते ही ये खतरनाक गैसें विभिन्न अंगों को निष्क्रिय कर देती हैं, रक्त में मिल जाती हैं तथा दिमाग, फेफड़े, हृदय पर जानलेवा दुष्प्रभाव डालती हैं। फलस्वरूप व्यक्ति बेहोश या मृत्यु को प्राप्त हो सकता है।
6. बिल्डिंग में मौजूद पेट्रोलियम बाई प्रोडक्ट, प्लास्टिक, रबर, फोम, सिन्थेटिक कपड़े, केमिकल, ट्रीटमेंट किए हुए प्लाइवुड के दरवाजे, फर्नीचर, खिड़कियाँ, पेन्ट, एडहेसिव आदि ऐसी गैसों को पैदा करने वाले मुख्य उत्पादक के रूप में पाये जाते हैं।
7. अपार्टमेन्ट, अस्पताल, स्कूल-कॉलेज, ऑफिस, मल्टीप्लैक्स, मल्टीस्टोरीज, व्यापारिक प्रतिष्ठान आदि जैसी जगहें धुएँ व गैसों के दुष्प्रभाव में जल्दी आती हैं तथा आग लगने की दशा में इन जगहों से व्यक्ति का सुरक्षित बाहर आना आग व धुएँ दोनों से ही सफलतापूर्वक लड़ने से सम्भव हो सकता है।
8. आग लगने की सूचना मिलते ही अग्नि-शमन यंत्रों के द्वारा तुरन्त आग पर काबू पाना चाहिए, यदि मौजूद यंत्रों द्वारा काबू पाना मुश्किल दिख रहा हो तो तुरन्त 101 नम्बर या फायर ब्रिगेड के स्थानीय फोन नं. पर सूचना दे देनी चाहिए।
9. ऊँची इमारतों में धुआँ नीचे से ऊपर की ओर मुख्यतः लिफ्ट, डक्टिंग या सीढ़ियों से गुजरता है। ऐसे में 'Fire Exit' या आपातकालीन सीढ़ियों से नीचे ग्राउण्ड फ्लोर में आना चाहिए, जो कि बाहर की तरफ धुएँ को ध्यान में रखकर बनाई जाती हैं।
10. कार्यालयों तथा घरों में धुएँ से बचाने वाले प्रतिव्यक्ति कम से कम 1 फेस मास्क अवश्य हो। इसके न होने पर गीला रूमाल नाक-मुँह में बाँध लेना चाहिए। खड़े होकर चलने में धुआँ ज्यादा लगे तो घुटनों के बल बैठकर उतरना चाहिए।
11. यदि व्यक्ति कई हों तो एक-दूसरे का हाथ पकड़कर लाइन बनाकर चलना चाहिए जिससे कोई व्यक्ति भयभीत न हो तथा बेहोश होने की दशा में अन्य लोगों को उसे संभालने में आसानी हो। कभी भी भगदड़ नहीं मचानी चाहिए। महिलाओं और बच्चों को बीच में रखना चाहिए।
12. ऐसे में Smoke-Heat Detectors भी लगाए जा सकते हैं तथा अलार्म सिस्टम के साथ जोड़े जाने चाहिए।

"People don't plan to fail, they fail to plan."

प्रदीप दीक्षित
(बैच 88)

With best compliments from : **Dr. Tarun Gupta (Batch 1990)**

SANTOSH HOSPITAL

Santosh Diagnostic & Nursing Home (P) Ltd.

127/214, BARAH DEVI CHAURAHA (Near Lal Palace Cinema), JUHI, KANPUR-14

Ph. : Hos. 2602180, 2644001. Mob. - 9415052311, 9415052312

E-mail : drtarun.gupta@gmail.com. santoshhospitalkanpur@gmail.com

Dr. Sakshi Gupta
M.B.B.S. (Honors.), D.G.O.

Dr. P.C. Gupta
M.B.B.S., D.M.R.E.

Dr. Tarun Gupta
M.B.B.S., D.H.A.

A Sixty Bedded Multi Speciality Hospital With All Ultra Modern Facilities Under One Roof In South City

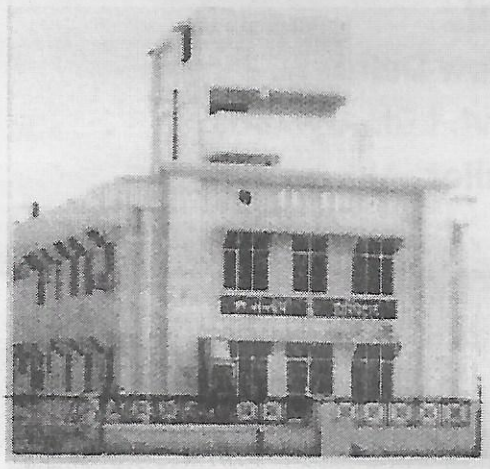

Hospital Attached :
KESCO, Provident Fund, F.C.I., EIP Power Corporation Ltd., Raksh TDA. RSBY (Smart Card Holder), ICICI Kanpur, Star Health, Safeway

Emergency Services:
The Best Emergency Services round the clock.

Trauma Centre :

Intensive Care Services :
ICU, NICU.CCU

Surgery :
General Surgery, Laparoscopic, Cystoscopy, Obstetric & Gynecology, Pediatric Surgery, Opthalmic, Orthopaedic, Uro Surgery, ENT, Neuro Surgery, Cosmetic & Plastic Surgery, Micro Surgery, Dental Surgery, Spinal Surgery, Total Hip & Knee Replacement and GI Surgery, Eye Surgery with latest microscopy, IOL implant and Phaco.

O.P.D. Services :
Obstetric & Gynecology, Pediatric & Neonatology, Gastroenterology, Cardiologist, Chest Specialist, Neuro-Physician, Nephrology, Internal Medicine, Oncology and Other General OPD Services by Senior Consultants in Every Day and Evening Hours.

Special O.P.D. Services :

Asthma	T.B.
Diabetics	Hypertention
Vaccination	Infertility
Cancer	Skin & V.D.,Ortho Dentestry

Extra Services :
Medical Store (24 hrs.), Ambulance (24 hrs.)
EPABX/CCTV
Canopy & Three Generators Set
Pathology (24 hrs.), C-Arm.Liftfor patients.
Central O_2 & N_2O Gas Supply.
Fully Qualified & Experienced Nursing Staff for quality care.

Indoor Services :
General Ward Male
General Ward Female
Cubical Ward
Private Room
Deluxe Room/Super Deluxe Room
Fully Equipped Two Operation Theater with Pulse Oximetre & Cardiac Monitor.
Fully Equipped PBU, Fully Equipped two Labour Room.

Diagnostic Service Centre :
Fully Equipped 34 years old computrised Pathology Lab (with Auto Analizer).
100 M.A. & 60 M.A. Portable X-Ray Unit
Ultra Sound Machine
E.C.G., E,E.G.
Cardiac Monitor

For More Details Please Contact :
Dr. Ramesh Tiwari
Co-Ordinator
Mob. : 9451377226

With best compliments from :

Rajlaxmi TRADINGS

Authorised Agent of :

Nirmal Fibres Pvt. Ltd., New Delhi

Techno Associates Industries Pvt. Ltd., Gwalior

Romika Fibres, Gwalior

Trading of :

Polyester Staple Fibre / Imported Fibre / Polyester Wadding / Cotton Wadding / PP NON WOVEN Fabric

Office :

113/134, SWAROOP NAGAR, GHANTAGHAR MARKET

KANPUR - 208 002

Ph. : 0512-2543075 (O), FAX : 0512-2536444

Mob. : 9415126594, 9336116460, 9235636462

E-mail : rajlaxmitradings@yahoo.com

: rajlaxmitradings@gmail.com

VIKAS GUPTA (Batch 1989)

Proprietor

With best compliments from :

Vidhi agencies

118/220, KAUSHALPURI, KANPUR-208 012

Mob. : 9839037053, 9044442420

E-mail : naveen_shorff1@rediffmail.com

Naveen Shorff **(Batch 1977)**

With best compliments from :

Paid 2000/-
by Mohan
on 29/9/12

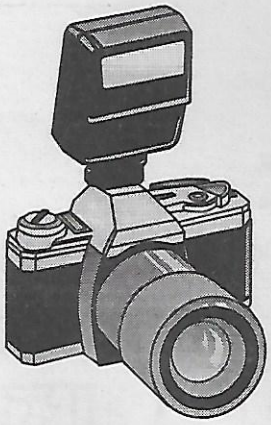

KUKKI'S COLOUR LAB

17/710, KURSAWAN, KANPUR-208 001

Ph. : (0512)32949211, 3013211

Mob. : 9335077794

Mridul Gupta **(Batch 1986)**

शुभ कामनाओं सहित –

शुद्ध एवं स्वादिष्ट व्यंजनों की शानदार और व्यवस्थित प्रस्तुति से

कानपुर महानगर में अपनी विशिष्ट पहचान तथा

विश्वास लिए 22 वर्षों से

आपकी सेवा में

ब्रज कैटर्स

104-A/99, रामबाग, कानपुर - 208 012 (भारत)

दूरभाष : +91-9839120551, +91-512-2547044

ई-मेल : ajayshankerdixit@yahoo.in

वेब साइट : brijcaterers.com

अजय शंकर दीक्षित (बैच 1983)

हमारी गतिविधियाँ

ग्रामोत्थान हेतु चलाये जा रहे प्रोजेक्ट प्रयास
मुख्यालय (सरौंहा, उन्नाव) में उपस्थित सदस्य गण

प्रोजेक्ट प्रयास के उत्पादों का परिचयात्मक प्रदर्शन

विद्यालय के वर्तमान छात्रों के साथ मैत्री मैच

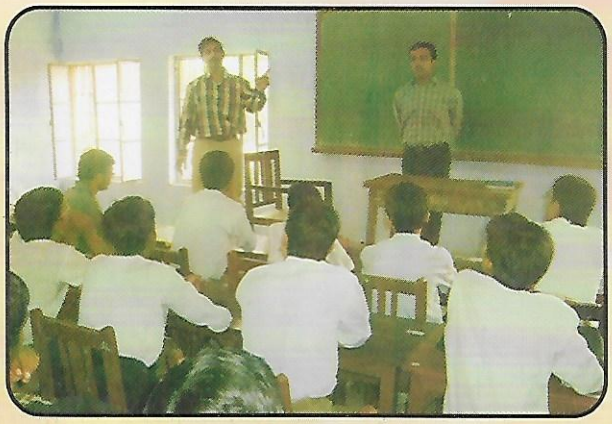

वर्तमान छात्रों हेतु आयोजित व्यक्तित्व विकास शिविर

संगठन का मुख्य आधार नियमित मासिक बैठक

संगठन का विस्तार

कैलिफोर्निया में युग भारती बैठक

86 बैच का वृहद एकत्रीकरण

युग–भारती (कोलकाता) का पारिवारिक मिलन

युग–भारती (दिल्ली) का सम्मेलन

युग–भारती (लखनऊ) की बैठक के पश्चात
मा॰ ओमशङ्कर जी के साथ उपस्थित सदस्यगण